





एक सुंदर और शांत गाँव में विवेक नाम का एक अत्यंत जिज्ञासु और प्रतिभावान छात्र रहता था। वह अपनी पाठशाला में हर दिन कुछ न सीखने के लिए हमेशा उत्सुक और अग्रसर रहता था। एक दिन उसके गुरुजी ने कक्षा में शब्दों के चमत्कार यानी उपसर्ग और प्रत्यय के बारे में विस्तार से समझाया।



गुरुजी ने बताया कि कैसे 'ज्ञान' शब्द के आगे 'वि' उपसर्ग लगाएं से वह 'विज्ञान' बन जाता है और पीछे 'ता' प्रत्यय लगाने से 'ज्ञानता' बन जाता है। विवेक इस शब्द-संरचना के खेल से बेहद प्रभावित हुआ और उसने घर लौटकर इस पर गहराई से विचार करने का निश्चय किया।



उसी शाम जब विवेक अपने दादाजी के पुराने कमरे में एक पुराना और अनमोल पुस्तक खोज रहा था, तब उसे एक धूल भरी, रहस्यमयी डायरी मिली। उस चमकीले आवरण वाली डायरी के पहले पृष्ठ पर कुछ अजीब और पेचीदा शब्द लिखे थे जो बिना उपसर्ग और प्रत्यय के अर्धं लग रहे थे।



विवेक ने ध्यान से देखा तो समझ आया कि डायरी का रहस्यमय ताला तभी खुलेगा जब वह सही उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर सार्थक शब्द बनाएगा। उसने अपने दिमाग पर जोर दिया और 'मान' शब्द में 'अप' अं 'अभि' जोड़कर 'अपमान' और 'अभिमान' जैसे नए शब्द बनाए।



जैसे ही उसने सही शब्दों का उच्चारण किया, डायरी का ताला एक जादुई रोशनी के साथ अचानक खुल गया। डायरी के पन्नों से एक अलौकिक और विस्मयकारी प्रकाश निकला, जिसने विवेक को अपने भीतर समाहित कर लिया और वह एक नए काल्पनिक संसार में पहुँच गया।



वह संसार शब्दों का नगर था जहाँ हर तरफ असंतोष फैला हुआ क्योंकि दुष्ट शक्तियों ने वहाँ के मूल शब्दों से उनके उपसर्ग और प्रत्यय छीन लिए थे। विवेक ने उस बेजान दुनिया को फिर से खुशहाल और सजीव बनाने के लिए अपनी भाषाई क्षमता का उपयोग करने का साहस संकल्प लिया।



विवेक ने आगे बढ़कर 'बल' शब्द के आगे 'प्र' उपसर्ग जोड़कर उसे 'प्रबल' बनाया और 'सफलता' के पीछे 'पूर्वक' लगाकर उसे 'सफलतापूर्वक' में बदल दिया। देखते ही देखते नगर के मुरझाए हुए पेड़-पौधे और उदास लोग फिर से जीवित और आनंदित हो उठे।



तभी वहाँ उस नगर का रक्षक प्रकट हुआ, जो विवेक की इस बुद्धिमत्ता और कर्मठता को देखकर अत्यंत प्रसन्न और गद्गद हुआ। उस विवेक को एक चमकीला और अमूल्य ज्ञान-रत्न उपहार में दिया, जो उसकी सच्ची लगन और कठोर परिश्रम का प्रतीक था।



ज्ञान-रत्न को हाथ में लेते ही विवेक की आँखें खुलीं और उसने ख  
को वापस अपने घर के अध्ययन कक्ष में पाया। उसके सामने वही पुरा  
डायरी खुली हुई थी, लेकिन अब उसमें सारे शब्द पूरी तरह से स्पष्ट, सुं  
और मुद्रित दिखाई दे रहे थे।



अगले दिन विवेक ने पाठशाला जाकर अपने गुरुजी और सहपाठियों को इस अद्भुत और अविस्मरणीय यात्रा की पूरी कहानी सुनाई। सभी बच्चों ने समझ लिया कि व्याकरण केवल रटने के लिए न बल्कि जीवन को सुंदर और अर्थपूर्ण बनाने का एक शक्तिशाली माध्यम है।